शिवरात्रि व्रत कथा: शिकारी गुरुद्रुह, बेलपत्र और चार प्रहर की पूजा (शिव महापुराण) | मासिक शिवरात्रि 2026–27 लिस्ट

26 नवंबर 2026 • पढ़ने में 9 मिनट शिव महापुराण कथा शिवरात्रि व्रत त्योहार

शिवरात्रि व्रत कथा शिव महापुराण की **कोटिरुद्र संहिता (अध्याय 40)** में है: एक क्रूर शिकारी, जिसने जीवन भर कोई पुण्य नहीं किया, अनजाने में एक रात शिवरात्रि का व्रत कर बैठा, और सुबह होते-होते शिव ने स्वयं उसे दर्शन दिए। यही शिकारी आगे चलकर श्री राम का मित्र **गुह** बना। नीचे पूरी कथा सरल हिंदी में, शिव पुराण (अध्याय 38) के अनुसार व्रत की विधि, व्रत के नियम, और **मासिक शिवरात्रि 2026–27 की पूरी लिस्ट**।

शिकारी गुरुद्रुह: जिसने कभी पुण्य नहीं किया

बहुत पहले एक वन में **गुरुद्रुह** नाम का शिकारी रहता था। बड़ा परिवार था, शरीर से बलवान था, पर स्वभाव से निर्दयी। रोज़ वन में जाकर हिरण मारता, और मौका मिलता तो चोरी भी करता। बचपन से उसने एक भी शुभ काम नहीं किया था।

एक दिन शिवरात्रि थी, पर वन में रहने वाले उस शिकारी को इसका पता भी नहीं था। उस दिन घर में खाने को कुछ नहीं था। माता-पिता और पत्नी भूख से व्याकुल होकर बोले: "कुछ खाने को लाओ।" शिकारी धनुष उठाकर निकल पड़ा। पूरा दिन भटका, पर एक भी शिकार हाथ नहीं आया। सूरज डूब गया। वह सोचने लगा: "खाली हाथ घर कैसे जाऊँ? माता-पिता, बच्चे, पत्नी, सबका क्या होगा?"

तालाब के किनारे बेल का पेड़

वह एक तालाब के पास गया, जहाँ जानवर पानी पीने आते थे। सोचा: "कोई न कोई ज़रूर आएगा।" थोड़ा पानी साथ लेकर वह किनारे के **बेल के पेड़** पर चढ़कर बैठ गया। भूखा-प्यासा, जागता हुआ, शिकार की प्रतीक्षा में।

उसे पता नहीं था कि उसी पेड़ के नीचे एक **शिवलिंग** था।

पहला प्रहर: हिरणी का वचन

रात के पहले प्रहर में एक प्यासी हिरणी डरते-डरते पानी पीने आई। शिकारी ने खुश होकर तुरंत धनुष पर बाण चढ़ाया। इसी हलचल में उसके साथ रखा थोड़ा पानी और बेल के कुछ पत्ते नीचे शिवलिंग पर गिर पड़े। अनजाने में ही **रात के पहले प्रहर की शिव पूजा** हो गई, और शिकारी के पाप घटने लगे।

आवाज़ सुनकर हिरणी ने ऊपर देखा और पूछा: "शिकारी, क्या करना चाहते हो? सच बताओ।" शिकारी बोला: "मेरा परिवार भूखा है। तुम्हें मारकर उनकी भूख मिटाऊँगा।" हिरणी ने कहा: "धन्य है मेरा यह शरीर, जो किसी के काम आएगा। पर मेरे छोटे बच्चे घर पर हैं। उन्हें अपनी बहन या पति को सौंपकर लौट आऊँगी। **पृथ्वी सत्य पर टिकी है, समुद्र सत्य पर टिका है**; मैं झूठ नहीं बोलूँगी।" जब शिकारी नहीं माना, तो हिरणी ने कड़ी शपथ ली कि न लौटे तो उसे विश्वासघातियों और कृतघ्नों का पाप लगे। शिकारी ने उसे जाने दिया। पहला प्रहर बीत गया, और शिकारी को एक पल नींद नहीं आई।

दूसरा और तीसरा प्रहर

दूसरे प्रहर में उस हिरणी की बहन उसे खोजती हुई आई। शिकारी ने फिर बाण चढ़ाया, और फिर पानी और बेलपत्र शिवलिंग पर गिरे: **दूसरे प्रहर की पूजा** भी हो गई। इस हिरणी ने भी शिव की शपथ लेकर लौटने का वचन दिया, और शिकारी ने उसे भी जाने दिया।

तीसरे प्रहर में हिरणियों को खोजता हुआ एक बलवान हिरण आया। फिर वही हुआ: बाण चढ़ा, बेलपत्र गिरे, और **तीसरे प्रहर की पूजा** हो गई। हिरण बोला: "जो शरीर किसी के काम न आए, वह व्यर्थ है। बच्चों को उनकी माँ को सौंपकर लौटूँगा।" अब तक शिकारी का मन बदलने लगा था। उसने कहा: "हर जानवर वचन देकर गया, कोई नहीं लौटा।" हिरण ने भी सत्य की शपथ ली, और शिकारी ने उसे जाने दिया।

चौथा प्रहर: जब पूरा परिवार लौट आया

घर पहुँचकर तीनों ने एक-दूसरे की बात सुनी, और तय किया: वचन दिया है, तो जाना ही होगा। हर कोई दूसरे को रोककर खुद जाना चाहता था: "बच्चों को माँ की ज़रूरत है, मैं जाऊँगी", "नहीं, मैं जाऊँगा।" अंत में बच्चों को पड़ोसियों को सौंपकर तीनों साथ चल पड़े। बच्चे भी पीछे-पीछे आ गए: "जो उनका होगा, वही हमारा।"

पूरे परिवार को देखकर शिकारी ने फिर बाण चढ़ाया, और फिर जल और बेलपत्र शिवलिंग पर गिरे। **चौथे प्रहर की पूजा** भी पूरी हो गई, और उसके सारे पाप पल भर में भस्म हो गए।

हिरणों ने कहा: "शिकारी, हमारे शरीर को सार्थक करो।" यह सुनकर शिकारी का हृदय काँप उठा: "ये पशु होकर भी दूसरों के लिए शरीर देने को तैयार हैं, और मैंने मनुष्य होकर क्या किया? दूसरों को सताकर अपना पेट भरा। धिक्कार है मेरे जीवन को!" उसने बाण उतार लिया और कहा: **"तुम सब धन्य हो। सुरक्षित लौट जाओ।"**

शिव के दर्शन, और शिकारी बना गुह

उसी क्षण महादेव प्रसन्न होकर प्रकट हुए और बोले: "शिकारी, मैं तुम्हारे इस व्रत से प्रसन्न हूँ। वर माँगो।" शिव के दर्शन होते ही शिकारी मुक्त हो गया। वह चरणों में गिरकर बोला: "मुझे सब कुछ मिल गया।"

शिव ने उसे नया नाम दिया: **गुह**। वरदान दिया: "तुम **श्रृंगवेरपुर** में राज करोगे। तुम्हारा वंश बिना संकट के बढ़ेगा, और देवताओं से पूजित **श्री राम स्वयं तुम्हारे घर आएँगे** और तुमसे मित्रता करेंगे।" रामायण के निषादराज गुह, जिन्होंने राम जी को गंगा पार कराई, वही यह शिकारी है। हिरणों का परिवार भी शिव के दर्शन से पशु-योनि से मुक्त होकर दिव्य लोक गया। जहाँ यह हुआ, वहाँ अर्बुद पर्वत पर शिव **व्याधेश्वर** नाम से प्रसिद्ध हुए।

शिव पुराण यहाँ एक बड़ी बात कहता है: **जिसने अनजाने में यह व्रत किया, उसे भी शिव-सायुज्य मिला; जो भक्ति से करेगा, उसका तो कहना ही क्या।** अनगिनत व्रत, तीर्थ, दान, यज्ञ और जप भी शिवरात्रि व्रत के बराबर नहीं बताए गए।

शिवरात्रि व्रत कैसे करें? (शिव पुराण, अध्याय 38)

स्वयं शिव ने ब्रह्मा, विष्णु और पार्वती जी को यह विधि बताई। सरल रूप में:

1. **सुबह:** स्नान करके शिव मंदिर जाइए, प्रणाम करके संकल्प लीजिए: "हे देवदेव, नीलकंठ, आपको नमस्कार। मैं आपका शिवरात्रि व्रत करना चाहता/चाहती हूँ। आपकी कृपा से यह निर्विघ्न पूरा हो, और काम-क्रोध जैसे शत्रु मुझे न सताएँ।"

2. **दिन भर:** व्रत रखिए; शास्त्र कहता है कि शिवरात्रि के दिन भोजन न करें (स्वास्थ्य के अनुसार फल-जल लें)।
3. **रात के चार प्रहर:** हर तीन घंटे के प्रहर में शिवलिंग (या मिट्टी के पार्थिव लिंग) की पूजा कीजिए: जल, बेलपत्र, फूल, धूप-दीप, और मंत्र के साथ। भजन-कीर्तन के साथ **जागरण** कीजिए, और व्रत की महिमा (यही कथा) सुनिए।
4. **अगली सुबह:** फिर स्नान, पूजा, और हाथ जोड़कर प्रार्थना: "प्रभु, आपकी आज्ञा से शुरू किया व्रत पूरा हुआ; प्रसन्न होइए, कृपा कीजिए।" फूल अर्पित कीजिए, दान दीजिए, शिव भक्तों को भोजन कराइए, फिर स्वयं भोजन (पारण) कीजिए।

शिवलिंग पर क्या न चढ़ाएँ, यह यहाँ पढ़िए; जागरण में ॐ नमः शिवाय 1008 बार (गिनती के साथ) चला सकते हैं।

शिवरात्रि व्रत के नियम

- शिव पुराण के अनुसार **कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी** शिव को विशेष प्रिय है; हर महीने की यही रात **मासिक शिवरात्रि** है। माघ (फाल्गुन, उत्तर भारत की गणना में) कृष्ण चतुर्दशी की रात **महाशिवरात्रि** है।
- व्रत उसी दिन होता है जब चतुर्दशी **मध्यरात्रि** तक रहे।
- दिन में भोजन न करें; रात में जागरण और चारों प्रहर की पूजा सबसे श्रेष्ठ है। जो पूरा न कर सकें, वे एक प्रहर की पूजा और जाप भी श्रद्धा से करें; कथा का शिकारी तो अनजाने में भी पार हो गया।
- झूठ, क्रोध और किसी को कष्ट देने से बचें: इस कथा में सबसे बड़ा धर्म **सत्य** और **दया** ही है।
- बीमार, गर्भवती, बुज़ुर्ग या दवा लेने वाले भक्त डॉक्टर की सलाह से ही उपवास करें; भाव और पूजा ही मुख्य हैं।

मासिक शिवरात्रि 2026–27 लिस्ट

तारीख	दिन	पर्व
7 दिसंबर 2026	सोमवार	मासिक शिवरात्रि
5 जनवरी 2027	मंगलवार	मासिक शिवरात्रि
4 फ़रवरी 2027	गुरुवार	मासिक शिवरात्रि
6 मार्च 2027	शनिवार	**महाशिवरात्रि**
5 अप्रैल 2027	सोमवार	मासिक शिवरात्रि

4 मई 2027	मंगलवार	मासिक शिवरात्रि
3 जून 2027	गुरुवार	मासिक शिवरात्रि
2 जुलाई 2027	शुक्रवार	मासिक शिवरात्रि
31 जुलाई 2027	शनिवार	मासिक शिवरात्रि
30 अगस्त 2027	सोमवार	मासिक शिवरात्रि
28 सितंबर 2027	मंगलवार	मासिक शिवरात्रि
27 अक्टूबर 2027	बुधवार	मासिक शिवरात्रि
26 नवंबर 2027	शुक्रवार	मासिक शिवरात्रि
25 दिसंबर 2027	शनिवार	मासिक शिवरात्रि

तारीखें हमारी अपनी खगोलीय गणना से (कृष्ण चतुर्दशी, मध्यरात्रि, उज्जैन)। क्षेत्रीय पंचांग में कभी-कभी एक दिन का अंतर हो सकता है; व्रत से पहले अपने पंडित जी से पुष्टि कर लें। आज का तिथि-पंचांग और राहु काल होम पेज पर है।

इस कथा की 3 सीख

1. **शिव भाव भी देखते हैं और कर्म भी।** शिकारी ने अनजाने में जल और बेलपत्र चढ़ाए, जागा, भूखा रहा, और अंत में दया दिखाई; यही पूरा व्रत बन गया।
2. **सत्य पर ही सब टिका है।** हिरणों ने जान देकर भी वचन निभाया, और उनके सत्य ने शिकारी का हृदय बदल दिया।
3. **सबसे बड़ा बदलाव एक रात में हो सकता है।** जो शाम को शिकारी था, वह सुबह शिव का भक्त गुह था।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

शिवरात्रि व्रत कथा शिव पुराण में कहाँ है?
शिव महापुराण, कोटिरुद्र संहिता, अध्याय 40 (शिकारी गुरुद्रुह की कथा); व्रत की विधि अध्याय 38–39 में है।

शिवरात्रि की कहानी में शिकारी का नाम क्या था?
गुरुद्रुह। शिव ने प्रसन्न होकर उसे "गुह" नाम दिया, जो आगे चलकर श्री राम के मित्र निषादराज गुह बने।

शिकारी ने अनजाने में पूजा कैसे की?

वह बेल के पेड़ पर बैठा था; हर बार बाण चढ़ाते समय उसका पानी और बेलपत्र नीचे शिवलिंग पर गिरे, और जागते हुए रात के चारों प्रहर की पूजा पूरी हो गई।

मासिक शिवरात्रि दिसंबर 2026 में कब है?

सोमवार, 7 दिसंबर 2026। अगली महाशिवरात्रि शनिवार, 6 मार्च 2027 को है।

शिवरात्रि व्रत में क्या खाएँ?

शिव पुराण दिन में भोजन न करने को कहता है; अगली सुबह पूजा और दान के बाद पारण करें। स्वास्थ्य के अनुसार फल और जल लिया जा सकता है।

शिवरात्रि व्रत कथा कब सुनें?

व्रत की रात, पूजा और जागरण के बीच। शास्त्र कहता है कि व्रत पूरा करने के इच्छुक भक्त इसकी महिमा सुनें।

🔱 **शिव महापुराण कथा**, हर सोमवार और गुरुवार सुबह 7 बजे: पूरी श्रृंखला YouTube पर। साथ में पढ़िए: शिवलिंग की उत्पत्ति और पहली शिवरात्रि, नंदी की कथा।

हर शिवरात्रि की याद WhatsApp पर: शिव कैलाशा WhatsApp चैनल से जुड़ें

स्रोत: शिव महापुराण, कोटिरुद्र संहिता, अध्याय 38 (शिवरात्रि व्रत की विधि) और अध्याय 40 (शिवरात्रि की महिमा: शिकारी की कथा); अंग्रेज़ी अनुवाद Motilal Banarsidass, wisdomlib.org पर पढ़कर। कथा सरल हिंदी में, अपने शब्दों में।